लोक साहित्य में सावन गीत

10

कृष्ण प्रकाश तिवारी
शोधार्थी
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, (उ0प्र0)

प्रो0 (डॉ.) वन्दना पाण्डेय
शोध निर्देशिका (हिंदी विभाग)
गोकुलदास हिंदू गर्ल्स डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद, (उ0प्र0)

सारांश

हमारे लोक गीत लोक साहित्य की थाती है। लोकगीतों की परम्परा अनादि काल से चली आ रही है, इनका संरक्षण, संवंधर्न हमें युगो–युगो तक मार्गदर्शन करता रहेगा। इन गीतों में हमारी संस्कृति की जड़ है जिसे हमें सिंचित करते रहना है अन्यथा आने वाली पीढ़ी का वही हाल होगा जो बिना जड़ के वृक्ष का। यही शोध का सारांश है।

लोक साहित्य लोक मन की सूक्ष्म अनुभूतियों का महाकाव्य है। जिसमें जन–जन के मन की वह पवित्र त्रिवेणी प्रवाहित होती है जो सभ्यता एवं संस्कृति रूपी अविरल धारा को अक्षुण्य रखती है। लोक साहित्य में लोक जीवन और इस जीवन को जीने की कला है जो बुद्धिपक्ष को महत्ता न प्रदान करके हृदय पक्ष को महत्व प्रदान करती है। यही तो वह रस है जिससे आम जन–जीवन रसासिक्त होता है।

लोक साहित्य के विविध रूप हैं जिनमें गीत, कथाएं, गाथाएं, नाट्य तथा लोक प्रकीर्णक आदि शाब्दिक अभिव्यक्तियों में लोक साहित्य का रूप उद्घाटित होता है। जिसमें जन–जन की भावनाएं झलकती हैं।

लोकगीतों में प्रत्येक ऋतु–माह के अलग–अलग गीत होते है जो सिर्फ उसी समय मनोहारी/कर्णप्रिय लगते है जब उनका समय होता है। जैसे सावन माह में कजरी और फाल्गुन माह में फाग। ठीक इसी प्रकार से पावस (वर्षा ऋतु में) के चार महीनों में सावन माह जो प्रकृति के सुन्दरता का विशिष्ट रूप होता है, का गीत लोक साहित्य में अत्यधिक प्रिय है। सावन माह में गाया जाने वाला लोक गीत अवध क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय है। चाहे वह सावन, कजरी, झूला, झूमर, कुछ भी हो यह भी कई रूपों में गाया जाता है। राधा–कृष्ण, राम–सीता, शंकर–पार्वती को आधार बनाकर या प्रिय के आने का संकेत या न आने पर वियोगिनी की व्यथा साथ में रहने पर हास–परिहास सभी रूपों में यह अत्यन्त कर्णप्रिय एवं मनोहारी होता है। सावन माह भगवान शिव को समर्पित होता है। जिसका महात्म्य श्रेष्ठ है।

यह माह तीज एवं त्योहारों का माना जाता है। लोक साहित्य के साथ–साथ हिंदी साहित्य में भी कवियों एवं लेखकों की दृष्टि खूब रमी है। अवधी कवियों में कुतुबन, मंझन से लेकर जायसी, तुलसी दास जी ने सावन माह का विशद वर्णन किया है। सावन माह के गीत वर्षा की फुहार के साथ सुखप्रद एवं बादर के उमड़–घूमड़ कर बरखा करने के लिए तत्पर रहने पर आधारित होते है।

बारह मासा में सावन के रिमझिम बरखा का वर्णन इस प्रकार है।

सावन में सखी शब्द सुहावन रिमझिम बरस बूंदे है। सबके बलमुआ घर–घर आयो हमरे बसल परदेश हो यही प्रीति कारण सेतु बाधे सिया आदेश श्री राम हो।

सावन माह में नवविवाहिता अपने नैहर लौटकर आती है तो सखियों संग मिलकर झूला–झूलती है अपनी–अपनी बातों को लेकर आपस में हँसी–ठिठोली करती है।

आयो सावन के महिनवा
आयो सावन के महिनवा
हे कजरिया खेले जाईब रे नइहरबा कजरिया
जब तुहु धमियां है जइबु नइहरवा – 2
से हम चली जाइब रे विदेशवा – 2
जाइए विदेशवा करबी हम नौकरिया
से करिलेव दूसरों रे विहवा – 2

जाइब नइहरवा कातवी हम चरखवा से तोहरा उनइल राखब हम गुलाम
से तोहरा अइसन राखव गुलमवा
जब तुहु धनिया हे राखब गुलमवा
से तब हम रहले रे हजुरवा।
से तोहरा अइसन।
आये सावन के महिनवा सखी हम सब झूला झूले ना
झूला–झूला ना सखी सब झूला झूले ना हो
रिमझिम बरसे रे बदरवा मोरि चुनरी भीगे ना
आये सावन का.....।

सावन माह में झूला का वर्णन प्रायः कदंब, चंदन, आम, पीपल, नीम के पेड़ पर ही मिलता है जिसमें झूला डालने की जिद प्रायः सखियों द्वारा नैहर में भाई से की जाती है।

घर पिछुरवा चन्दनवा के गदिया अब ताही में हिंडोला लगादेव
भैया सावन के रंग भारी।
ताही हिंडोला में झूलले गोरी सखियां बटोहिया
गिरले मुरझाय रे दैया सावन.....।
घोड़वा चढ़ल आवे रजवा सिपहिया अब चुनु के मोल कही देव रे।
दैया सावन के
रंग भारी गोरी के मोल हे लाख रूपया सावरी के मोल अनमोल रे। दैया।।
सावन.....।
काहे के मोल हे लाख रूपैया काहे मोल अनमोल रे दैया
सावन में.....।
गोरी के सोभे नैना कजरवा सावरी के सोभे शिर सिन्दुर
दैया.....।

सावन महिना में भाइयों के द्वारा अपनी बहनों को ससुराल से बुलाने (आनने) के लिए माँ के द्वारा इस गीत की मार्मिकता इस प्रकार है। जब बेटी का ब्याह दूर हुआ हो।

दूरि तुम उपजिउ चमेली, तुमका सिंचन को जाये।
तुमका सिंचिन जअहै मलिया, बेटउना, जिनकी फूली फुलवारि
दुरि देसि तुम ब्याही बहिनी, तुमका आनन को जाये।
तुमका आनन जइहै बीरन भइया, जिनकी बहिन ससुरारि।।

सावन महिना में सुहागिनी अपने माँ के द्वारा भेजे गये उपहार को श्रेष्ठ बताती है और सभी के ऊपर माँ का प्यार जो अपनी बेटी के याद में सावन में न आने पर रोती है। वहीं भउजी के ननद सम्बन्ध को कठोर दिखती है।

सावन सेंदुरा माँग भरि बिरना, चुनरी रँगइबै अनमोल।।
माया ने भेजो है नौ मन सोनवा, ददुली के लहर पटोर।
विरना ने भेजो है चढ़त कर द्योडरा, भउजी ने डेब्बा भरि पान।। 1
माया के सोनवा जनम भरि खइबे,
खइबे अरे जइहै लहर पटौर।
विरना के द्योड़वा से नगरी खुदइबे,
खुदइबे अरे सड़ि जहै डेब्बा के पान। 2
माया के केहे बेटी नित उठि अइहौ,
अइहौ अरे ददुली कहै छठि मास।
बिरना कहै बहिनर काज–परोजन,
परोजन अरे भउजी कहै कहा काम। 3
माया के रौये छतिया फटत है,
फटत है अरे ददुली के रोये सागर ताल।

बिरना के रोये नदिया बहत है,
बहत है अरे भउजी के जियरा कठोर। 4

झूला – झूलने की उत्कट अभिलाषा बहु के द्वारा सास से किस प्रकार प्रकट किया जाता है। जिसमें बहु के द्वारा घर का काम समेटने और लहुरे (छोटे) देवर के साथ झूला–झूलने का वर्णन कितना चित्ताकर्षक है।

डूँड़े पीपर महिमां परिगा है झुलुवा,
झुलुवा झुलन हम जाब।
पिसना पीसि के रखि देउ बउहर ,
झुलुवा झुलन तुम जाउ।
सब काम कइके रखि दिहेन सासू
झुलुवा.....।
सब काम कइके रखि देउ बउहर,
लहूरे देवर संग जाउ
एक झूक झूलिनि, दुई झूल झूलिन,
तिसरी मा चली तलवारि।
हर जोति आये, सरावन दइ आये
आय गये सइयां दुआर।।

पत्नी द्वारा अपने पति से सावन महीने में नइहर जाने की जिद करना, पति के द्वारा पत्नी के चले जाने पर खाना बनाने की समस्या का जवाब पत्नी से इस प्रकार है।

हमका जान देउ नइहरवा, मोरि कजरिया बीती जाय।।
जउ तुम रानी नइहर चली जइहौ, हमको जेउना को बनाई?
बहिनी बोलाय लायउ, जेउना बनइहै, जेयो बहिनी भाय।।
जउ तुम रानी नइहर चली जइहौ, हमका गेंड़वा को भराई? मोरि....।
बहिनी बोलाय जाये गेंड़वा भरइहै, द्युटयो बहिनीउ भाय।। मोरि..... ।

सावन माह में कजरी गीत सखियों के एक ही साथ हसी–ठिठोली धूम–धूम करके गाना साथ–साथ में करना। श्रृंगार के दोनों पक्षों का वर्णन सुनना किसी के भी मंत्रमुग्ध कर सकता है। कजरी में प्रायः टेर 'हरे रामा' से शुरू होता है। प्रकृति के उपमान, बदरी, कोयल, पपीहा, मोर, फुहार, बरखा का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।

अरे रामा सावन माँ घनघोर बदरिया छाई रे हारी।।
कहौ कोयल कूकू सुनावै, कहौ पपिहा सोर मचावै रामा।
अरे रामा रिमझिम परत फुहार, बदरिया छाई रे हारी।।1।।
जब याद पिया कै आवै, दिन रैन चैन नहि आवै रामा।
अरे रामा दादुर करत पुकार बदरिया छाई रे हारी।।2।।

सावन में श्रृंगार के सोलहों रूपों का वर्णन कजरी गीत में मिलता है। एक स्त्री द्वारा अपने पति से मेंहदी लाने और लगाने की जिद दृष्टव्य है।

पिया मेंहदी लाइद मोती झील से
जाइ के साइकिल से ना।
पिया मेंहदी लाव, छोटी ननदी से पिसाव – 2
हमका लगाइद चटकील से..... जाई के मोती झील।

सावन/कजरी गीत के नायक तो प्रायः अपने पति ही होते है लेकिन भगवान कृष्ण का चंचल स्वभाव गोपिकाओं के साथ झूला–झूलना, यमुना के किराने खेलना, पनघट पर गगरी फोड़ना आदि का वर्णन मिलता है। अवध क्षेत्र में भगवान राम को आधार बनाकर अवधी कजरी प्रायः गायी जाती है।

काहे रामा छाड़यो हइ अवधपुर,
राम के बड़ी–बड़ी अखियां हो, चन्दन द्यवर लिलार।। काहे0
राम के नान्हे–नान्हे दंतवा हो, ओठवन चुअत है गुलाल।। काहे0

राम के वन से अवधपुर आने के लिए अवध के लोगों को धैर्य धारण करना, पुनः राम को राजा के रूप में राज–पाट ग्रहण करने का भाव इस प्रकार है।

धीरज धरौ राम वन ते अइहै।। टेक।।
चारिउ भइया मिलि बागा लगइहै, धीरज धरौ राम नेबुला लाइहै।
चारिउ भइया मिलि कुँअनां खौदेहै, धीरज धरौ राम जगत बधइहै।
चारिउ भइया मिलि महला उठइ है, धीरज धरौ राम खिरकी लगेइहै।

संदर्भः–

1. लोक साहित्य पहचान – रामनारायण उपाध्याय प्रकाशनः कालिदास निगम, कालिदास प्रकाशन, उज्जैन (म0प्र0), पृ0 सं0–03, 05, 06।
2. अवधी लोक गीत – डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय, पृ0 सं0–103, 106।
3. अवधी लोक गीत – 2 – महेश प्रताप नारायण अवस्थी पृ0 सं0–07, 09, 13।
4. लोकगीत चयनिका – श्री मुखी देवी, जय भारती प्र पृ0 सं0–39, 121, 132 प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 सं0–39, 121, 132।
5. अवधी लोक साहित्य में नारी भावना – डॉ0 गुरूशरण लाल, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ पृ0 सं0–103, 116, 117।